17 जनवरी 2023, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य :2/- आर. एन. आई. 31109/77 JaipurCity / 224 / 2021-23

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के प्रवचन
अरिहन्त चैनल पर
प्रात: 6:30 से 7:00 तक
Ptst Youtube पर
पुन: प्रसारण 2.30 से 3.00 तक
प्रात: 9 से 10 तक प्रवचनसार पर

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

वर्ष : 45, अंक : 20
जनवरी (द्वितीय), 2023 (वीर नि. संवत्-2549)
संस्थापक सम्पादक : **अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल**
सम्पादक : **डॉ. संजीवकुमार गोधा**
सह-सम्पादक : **पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल**
आजीवन शुल्क : 251 रुपये
वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

ढाईद्वीप पंचकल्याणक की आमंत्रण पत्रिका का...

जयपुर में हुआ भव्य विमोचन समारोह

जयपुर (राज.) : ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर में होने वाले सदी के ऐतिहासिक श्री मज्जिनेन्द्र पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की भव्य आमंत्रण पत्रिका का विमोचन ज्ञानतीर्थ श्री टोडरमल स्मारक भवन में सम्पन्न हुआ।

30 दिसम्बर 2022 को प्रात: तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल की अध्यक्षता में यह समारोह सम्पन्न हुआ, जिसमें अनेक ट्रस्टों, संस्थाओं, संघटनों एवं मन्दिरों के विशिष्ट पदाधिकारियों में श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, श्री सुधांशुजी जैन, श्री नरेन्द्रजी बड़जात्या, श्री प्रदीपजी चौधरी, श्री महेन्द्रकुमारजी पाटनी, श्री उमरावमलजी जैन, श्री सुभाषजी जैन, श्री संजयजी गुरहा, श्री शान्तिकुमारजी गंगवाल, डॉ. अखिलजी बंसल आदि मंचासीन थे एवं श्री मनीषजी वैद, श्री सुभाषजी जैन, श्री प्रकाशचन्दजी जैन, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि जयपुर के सभी स्थानीय शास्त्री विद्वान उपस्थित रहे।

पंचकल्याणक के कार्याध्यक्ष पण्डित बिपिनजी शास्त्री ने पंचकल्याणक के प्रति सकल जैन समाज के उत्साह की चर्चा एवं महामंत्री डॉ. शुद्धात्मप्रकाशजी भारिल्ल ने पंचकल्याणक की भव्यता एवं आदर्शता से संबंधित अनेक बातें कहीं। अन्त में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल ने उद्बोधन स्वरूप मंगल आशीष प्रदान किया।

इस महोत्सव की **प्रथम पत्रिका** डॉ. भारिल्ल के द्वारा मुमुक्षु समाज के गढ़ सोनगढ़ को लिखी गई एवं **द्वितीय पत्रिका** बिपिनजी शास्त्री ने टोडरमल ट्रस्ट के अध्यक्ष श्री सुशीलकुमारजी गोदीका को भेंट की। पश्चात् समाज की प्रमुख संस्थाओं एवं प्रतिष्ठित महानुभावों को पत्रिकाएँ प्रेषित की गईं, देशभर में लगभग 5000 की संख्या में पत्रिकाएँ भेजी गईं।

विमोचन समारोह की सुसज्जित सभा

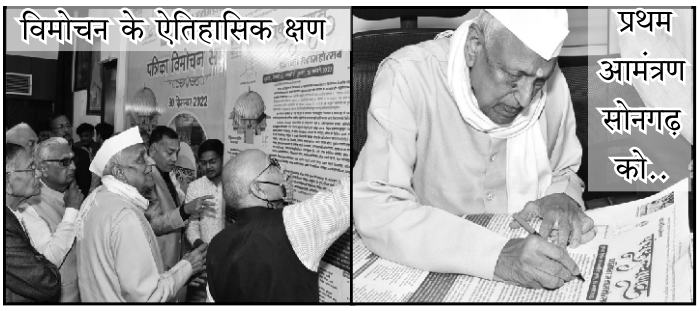
विमोचन के ऐतिहासिक क्षण

प्रथम आमंत्रण सोनगढ़ को..

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल से विशेष मुलाकात

जयपुर : यहाँ कुछ दिनों पूर्व 28 व 30 दिसम्बर 2022 को लन्दन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर पीटर आध्यात्मिकसत्पुरूष कानजीस्वामी के सम्बन्ध में विशेष तत्थों के परिज्ञान हेतु जयपुर पधारे थे।

जयपुर में उन्होंने गुरुदेवश्री के अनन्य भक्त तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल से मुलाकात की एवं गुरुदेवश्री के जीवन से सम्बन्धित तथा उनके द्वारा उद्घाटित क्रमबद्धपर्याय, अकर्त्तावाद जैसे सिद्धान्तों, समयसार जैसे महान ग्रन्थों, धर्म के दसलक्षण आदि के सम्बन्ध में विशेष जानकारियाँ प्राप्त कीं।

ज्ञातव्य है कि अप्रैल में गुरुदेवश्री कानजीस्वामी की जन्म जयंती के अवसर पर लन्दन यूनिवर्सिटी में विशेष सेमिनार होने जा रहा है; एतदर्थ प्रो. पीटर यह खोज-बीन कर रहें हैं। इस कार्य में उन्हें पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री, समर्थ हरदा, सोहम शाह विशाल मेहता व स्वस्ति जैन ने विशेष सहयोग किया।

51

सम्पादकीय -

पण्डितप्रवर टोडरमलजी

- डॉ. संजीवकुमार गोधा

नौवें अध्याय का सार (उपदेश का स्वरूप)

पुरुषार्थ से ही मोक्ष प्राप्ति...

एकेन्द्रियादि जीवों को तो विचार हो ही नहीं सकता और पंचन्द्रियों में जो जीव तीव्र कषायी हैं, वे पाप कार्य में ही लगे रहते हैं। इसलिए जो जीव विचार शक्ति सहित हैं और जिनके रागादि मन्द हों - वे जीव यदि तत्त्वनिर्णय में उपयोग लगायें, सच्चा पुरूषार्थ करें तो उनका भला होता है। ऐसा अवसर हमारे पास है यदि इस अवसर पर हम पुरुषार्थ से तत्त्वनिर्णय में उपयोग लगायें, उससे विशुद्धता बढ़ती है, जिससे कर्मों की शक्ति हीन होती है, कुछ काल में स्वमयेव ही दर्शनमोह का उपशम हो जाता है और तत्त्वों की यथार्थ प्रतीति होने से सम्यग्दर्शन होता है। सम्यग्दर्शन होने पर ज्ञान सम्यक् होता है। चारित्र मोह कर्म के उदय के निमित्त से रागादि होंगे वे भी धर्म कार्यों में लगने व वैराग्यादि भावना भाने से मन्द हो जायेंगे - ऐसा होने पर सम्यक् चारित्र प्रकट हो जाएगा। धीरे-धीरे पुरुषार्थ के बल से श्रेणी चढ़ने पर चारित्र मोह भी नष्ट हो जाएगा। ज्ञानावरणादि का नाश होने पर केवलज्ञानादि प्रकट हो जायेंगे, अरहन्त दशा प्रगटेगी और अल्प काल में शीघ्र ही सिद्धदशा प्राप्त कर लेगा - इसप्रकार से सभी कार्य एकमात्र तत्त्वनिर्णय में उपयोग लगाने से हो जायेंगे।

जहाँ कर्म का उदय तीव्र हो वहाँ तो पुरुषार्थ हो नहीं सकता; ऊपर के गुणस्थानों में पहुँचकर भी नीचे गिर जाता है; परन्तु यहाँ तो सर्व अवसर मिले हैं, इसलिए यहाँ प्रमादी होना योग्य नहीं है। सावधान होकर अपना कार्य करना। जैसे कोई पुरुष नदी के बहाब में बह रहा है, पानी के जोर से उसका कुछ पुरुषार्थ नहीं चलता। फिर कहीं जाकर नदी का बहाब कम होता है तब यदि हाथ-पैर मारे तो निकल सकता है। यदि तीव्र बहाब में ही हाथ-पैर मारे तो नहीं निकल पाएगा, उल्टा थक जाने से मंद बहाब में भी पुरुषार्थ नहीं कर पाएगा। उसीप्रकार एकेन्द्रियादि पर्याय में तो कर्म का तीव्र उदय होने पर पुरुषार्थ हो ही नहीं पा रहा था। जब पंचेन्द्रिय हुआ वहाँ भी तीव्र कषाय में पुरुषार्थ करने पर कुछ कार्य सिद्धि नहीं हुई, उल्टा पाप का ही पुरुषार्थ हुआ। यदि कषाय मंद हो, श्रीगुरु का सच्चा उपदेश मिले और वहाँ पुरुषार्थ करे तो मोक्ष प्राप्त कर लेगा।

महाभाग्य से हमको मिला जिनधर्म,
बड़े भाग्य से हमको मिले जिनवचन।।

अरे! महाभाग्य से हमें सभी बातें मिली हैं - सम्यग्दर्शन की प्राप्ति में जिनकी जरूरत है, वे सभी चीजें हमें मिल गईं हैं। शुद्ध आत्मतत्त्व की बातें हमें मिल गईं हैं। सम्पूर्ण जैन समाज में कितने लोग ऐसे है, जो मोक्षमार्ग को जानते हैं? **आत्मा परमात्मा बन सकता है** - यह जानते हैं? **पुण्य-पाप समान है** - यह बात कितने लोगों को सुनने मिलती है। 50 लाख जैनों में कितने लोग मोक्षमार्ग की चर्चा करते हैं और कितने लोग उसके लिए उपाय कर सकते हैं। महाभाग्य से हमें ये बातें सुनने मिल गई हैं। अत: अवसर चूकना योग्य नहीं है।

आज हमारी पाँचों इन्द्रियाँ स्वस्थ दिख रही हैं। अभी सुनने के लिए कर्ण इन्द्रिय मिली, पता नहीं अब कब मिलेगी और यदि मिल भी गई तो रंग राग की बातों में ही लगी रहेंगी। आज दिखाई दे रहा है कल शायद दिखाई न दे। आज हमें तत्त्व की बात सुनने का समय मिला है; जबकि कितने लोग व्यापार को बढ़ाकर उसमें लगे हुए हैं। घर-गृहस्थी के कार्यों में लगे हैं। यदि ये सभी चीजें मिल भी गईं और जैसी रूचि अभी है वैसी नहीं हुई तो? अनेक प्रकार की परिस्थितियों हो सकती हैं।

कई लोग तो दसलक्षण पर्व पर ही मन्दिरों में दिखते हैं फिर साल भर नहीं दिखते। जैसे डॉक्टर के यहाँ जाने का कोई समय/दिन/महीना नहीं होता। जब तकलीफ हो तब वहाँ जाते हैं। वैसे ही धर्म करने का भी कोई समय नहीं होता जब-जब आकुलता हो तब-तब धर्म करना और संसार में सदैव ही आकुलता होती है इसलिए इस धर्म रूपी दवाई की जरूरत हर व्यक्ति को हर समय है।

गुरुदेवश्री कहते थे - यदि 5-6 कलाक स्वाध्याय नहीं करे तो आत्मार्थीपना शोभता नहीं है।

जैसे अमीर बाप के बच्चे को पैसे की कीमत नहीं होती है। वह पानी की तरह बहाता है, विषय-भोगादि में लगाता है; क्योंकि इन्हें जन्म से ही सब मिल गया। पैसा कितने परिश्रम से कमाया जाता है, वह यह नहीं जानता। वैसे ही जैन धर्म, ये अनुकूल संयोग, ये तत्त्व की बातें सहज ही मिल गई है। इसलिए हमें इनकी महिमा नहीं हैं। आज इसे अनन्त काल के दुखो को एक झटके में समाप्त करने का अवसर मिल गया है। अनन्त काल के सुख के बीज बोने का अवसर आ गया है।

इसलिये अवसर चूकना योग्य नहीं है। अब सर्व प्रकार से अवसर आया है, ऐसा अवसर प्राप्त करना कठिन है। इसलिए श्रीगुरु दयालु होकर मोक्षमार्ग का उपदेश देते हैं, उसमें प्रवृत्ति करना।

इसप्रकार पुरूषार्थ से ही मोक्ष प्राप्ति होती है, इसे सिद्ध किया और पुरुषार्थ करने का योग्य अवसर हमारे पास है यह बात कही। अब आगे मोक्षमार्ग का वर्णन करेंगे। ●

अभी नहीं तो कभी नहीं?

– डॉ. अखिल बंसल

वर्तमान समय में जैन समाज अजीब स्थिति से गुजर रहा है। तीर्थराज सम्मेद शिखरजी को लेकर जो हालात बने हुए हैं, वह समाज की सेहत के लिए ठीक नहीं हैं। सिद्धक्षेत्र गिरनारजी हमारी अकर्मण्यता के कारण हमारे हाथ से लगभग निकल ही चुका है, इसके लिए हम और हमारा समाज ही पूर्ण रूप से दोषी है।

मुझे स्मरण आता है कि जब पण्डित नवलकिशोरजी शर्मा राज्यपाल थे, तब जैन संस्कृति रक्षा मंच ने उसे बचाने हेतु काफी सज़गता दिखाई और प्रयास भी किए। मंच के अध्यक्ष श्री मिलापचंदजी डण्डिया के व्यक्तिगत संबंधों के कारण उनकी बात सुनी भी गई और कारवाई भी हुई; पर हमारी समाज की अकर्मण्यता के कारण देखते–ही–देखते बाजी हाथ से फिसल गई। यदि उस समय डण्डियाजी को सहयोग व साथ दिया होता तो आज बात ही कुछ और होती। अब सॉप निकल जाने के बाद लाठी पीटने से कुछ नहीं होने वाला।

साहू अशोकजी के समय में भी शिखरजी के लिए आंदोलन हुआ था, उसके लिए दिल्ली में विशाल रैली निकाली गई जो जैन समाज की शक्ति प्रदर्शन के लिए मील का पत्थर साबित हुई। आज शिखरजी बचाने हेतु जैन समाज की अस्मिता दांव पर लगी हुई है। ऐसे समय में राष्ट्र संत श्वेतपिच्छाचार्य मुनि श्री विद्यानंदजी जैसे विरल व्यक्तित्व का अभाव खटक रहा है, आज वे होते तो इतना बखेड़ा ही नहीं होता, उनके जैसा विराट व्यक्तित्व किसी साधु का नहीं है। मयूर पंख का अध्यादेश कैसे उनके प्रयत्नों से वापस हुआ था – मैं उसका प्रत्यक्ष दर्शी हूँ।

यह सच है कि झारखण्ड के तत्कालीन मुख्यमंत्री रघुवर दयालजी की भाजपा सरकार के समय तीर्थराज सम्मेद शिखरजी को पर्यटन क्षेत्र बनाए जाने हेतु प्रस्ताव भेजा गया था, उस प्रस्ताव को मान्य करते हुए पर केंद्र की भाजपा सरकार ने उसे गजट नोटिफिकेशन जारी किया। बीच में बाबूलालजी मरांडी जो कि भाजपा के पूर्व मुख्यमंत्री थे; उनने आदिवासियों को भड़का कर तीर्थराज सम्मेद शिखर पर एक संथाल समाज के मंदिर की नींव रखी। हम और हमारा समाज सोता रहा और मूक दर्शक बना रहा। देखते–ही–देखते उधर मांस–मदिरा सब का प्रवेश हो गया। शिखरजी की प्रबंध समितियाँ मात्र धन एकत्र करने में मशगूल रहती हैं; अन्यथा वे चाहतीं तो पर्वत पर पहुँचने वाले मार्ग पर सुरक्षा की माकूल व्यवस्था कर सकती थीं।

गत वर्ष जब नए वर्ष पर विधर्मियों का रेला पवित्र शिखरजी की पहाड़ियों पर जूते पहने रंगरेलियाँ मनाते देखा गया तब हमारी आंखें खुलीं। पहले यह आस्था का केन्द्र था जहाँ सभी बिना जूते चप्पल के टॉर्च की रोशनी में लाठी के सहारे यात्रा करते थे। रास्ते में न तो कोई वस्तु ग्रहण की जाती थी और न ही लघुशंका के लिए ही कोई जाता था। यात्रा सम्पूर्ण होने पर लौटते वक्त गंधर्व नाले पर तीर्थक्षेत्र कमेटी की ओर से सभी को सुस्वादु नाश्ता दिया जाता था; पर बस ये सब अब बीती बातें हो गईं। हमारे अनेक साथी जूते चप्पल पहनकर यात्रा करने लगे। रास्ते में चाय, पानी, नाश्ता होने लगा, जिससे दुकानदारों को अच्छी–खासी कमाई होने लगी। आमोद–प्रमोद सुलभ हो गया और कचरे के ढेर लगने लगे। सरकार तो चाहती ही थी कि वहाँ होटलें खुलें, हेलीपैड बने, मयखाने खुलें; ताकि सरकार को टैक्स के जरिए कमाई हो और अफसरों की जेबें भरें।

पर अब पानी सिर से ऊपर निकल चुका है। हालात दिनों–दिन बिगड़ते देख समाज जागरुक हुई है। गाँव–गाँव और नगर–नगर में शिखरजी बचाने समाज उठ खड़ा हुआ है। रैलियों के माध्यम से प्रशासनिक अधिकारियों को ज्ञापन दिए जा रहे हैं और शिखरजी को पर्यटन केन्द्र नहीं; अपितु पवित्र धार्मिक तीर्थ स्थल घोषित करने की मांग की जा रही है। यह सब अपने–अपने स्तर पर स्थानीय कमेटियों के माध्यम से हो रहा है। कहने को दिगम्बर जैन महासमिति, दिगम्बर जैन परिषद् , दिगम्बर जैन महासभा व भा. दि.जैन तीर्थक्षेत्र कमेटी राष्ट्रीय स्तर की संस्थायें कार्यरत हैं, उनकी समन्वय समिति भी है; पर करती क्या हैं? कोई नहीं जान पाता। दिगम्बर व श्वेतांबर की समग्र जैन के एकीकरण हेतु भारत जैन महामण्डल भी बना था, पर इस प्रकरण की अगुवाई करने कोई आगे नहीं आया। ये सभी संस्थायें अपने अस्तित्व की लड़ाई लड़ रही हैं। किसी के दो फाड़ हो गये तो किसी ने ढाई–ढाई साल का कार्यकाल बांट लिया। **तेरी कमीज से मेरी कमीज़ उजली** में सभी व्यस्त हैं। शिखरजी आन्दोलन तब–तक सफल नहीं होगा जब–तक कोई शीर्षस्थ संगठन बागडोर अपने हाथ में न ले। आज आवश्यकता है कुशल नेतृत्व की, इसके लिए हमें आपसी मतभेद भुलाकर एक होना पड़ेगा। पंथों और संतों में बंटी समाज को अब शीर्षस्थ नेतृत्व की आवश्यकता है; अन्यथा आने वाले वक्त में न मंदिर बचेंगे और न समाज। हम आपस में लड़ते झगड़ते रहेंगे और संस्कार विहीन युवा पीढ़ी को क्या देकर जाएंगे विचारणीय है।

मेरा सुझाव है समय रहते चेतिए और आगे की सोचिए। हमें सिक्ख समाज के अकाली तख्त की भांति जैन संसद का गठन करना चाहिए। इसका मुखिया धर्मस्थल के धर्माधिकारी श्री वीरेन्द्र हेगड़े अथवा अशोकजी पाटनी या अडानीजी जैसे प्रभावी कर्मठ व्यक्तित्व को बनाकर एक मार्गदर्शक मण्डल बनाना चाहिए। इस मण्डल में पूर्व वरिष्ठ न्यायाधीश, रिटायर्ड आईएएस, आईपीएस, वरिष्ठ वकील, जैन सिद्धांत के मर्मज्ञ विद्वानों आदि को रखना चाहिए। श्री वीरेन्द्रजी हेगडे व अशोकजी पाटनी निर्विवाद व्यक्तित्व हैं, राजनीतिक दखल भी अच्छा खासा रखते हैं, हेगड़ेजी राज्यसभा के भी सदस्य हैं। इस विषय पर गम्भीरता से सोचें और आगे बढ़ें इसी में भलाई है।

देर आए दुरुस्त आए। आज मधुवन में जैन समाज के विरुद्ध जो वातावरण बना है, उससे हमारी आंखें खुल जाना चाहिए; क्योंकि यदि अभी भी नहीं खुलीं तो कभी नहीं खुलेंगी। ●

महाविद्यालय स्थल

टोडरमल महाविद्यालय में नए वर्ष पर छाई नई उमंग

जयपुर (राज.) : श्री टोडरमल दिगम्बर जैन सिद्धान्त महाविद्यालय, विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास हेतु समय-समय पर अनेक गतिविधियों का संचालन करता रहा है। इस वर्ष दिनांक 24 दिसम्बर 2022 से 11 जनवरी 2023 तक आचार्य समन्तभद्र खेल महोत्सव व आचार्य अमृतचन्द्र सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सप्ताह के अन्तर्गत विविध प्रतियोगितायें सम्पन्न हुई।

आचार्य अमृतचन्द्र सांस्कृतिक एवं साहित्यिक सप्ताह

(1) तात्कालिक अनिवार्य भाषण - 4 जनवरी को प्रातःकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आयुष जैन उदयपुर एवं द्वितीय स्थान नमन जैन हटा व ओम जैन ने प्राप्त किया। अध्यक्षा श्रीमती कमलाजी भारिल्ल एवं निर्णायक पण्डित पीयूषजी शास्त्री व पण्डित अमनजी शास्त्री रहे। संचालन सिद्धांत उपाध्याय सांगली व सम्मेद पाटील निमशीरगाँव ने किया।

(2) संस्कृत भाषण - 4 जनवरी को सांयकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में उपाध्याय वर्ग में श्रेष्ठ वक्ता आयुष जैन उदयपुर एवं शास्त्री वर्ग में श्रेष्ठ वक्ता संदेश जैन दिल्ली रहे। अध्यक्ष वाय. एस. रमेशजी जैन, विशिष्ठ अतिथि प्रो. रामकुमारजी शर्मा एवं निर्णायक श्री श्यामसुंदरजी पारिक रहे। संचालन दीपक जैन मझगुवाँ व चेतन जैन गुढ़ाचन्द्रजी ने किया।

(3) आंत्यक्षरी - 5 जनवरी को सांयकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अमन जैन-सोमिल जैन खनियांधाना एवं द्वितीय स्थान शाश्वत जैन सागर-कपिल जैन बम्हौरी ने प्राप्त किया। अध्यक्ष डॉ. के.जी. कुमावत, विशिष्ठ अतिथि डॉ. संजीवकुमारजी गोधा एवं निर्णायक पण्डित संजयजी शास्त्री व पण्डित जिनेन्द्रजी शास्त्री रहे। संचालन सक्षम जैन ललितपुर व अमन जैन ग्वालियर ने किया।

(4) अंग्रेजी भाषण (शास्त्री वर्ग) - 6 जनवरी को प्रातःकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान स्वस्ति जैन मिरज एवं द्वितीय स्थान वैभव जैन सागर ने प्राप्त किया। अध्यक्षा प्रो. दीपाजी माथुर, मुख्य अतिथि नीलिमाजी पाटनी एवं निर्णायिक प्रो. रेखाजी जैन व विदुषी प्रतीतिजी मोदी रहीं। संचालन सोहम जैन सोलापुर व संदेश जैन दिल्ली ने किया।

(5) काव्य पाठ - 6 जनवरी को सांयकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान वैभव जैन सागर एवं द्वितीय स्थान शाश्वत जैन सागर व सहज जैन छिंदवाड़ा ने प्राप्त किया। निर्णायक श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल एवं विशिष्ठ अतिथि श्री संजयजी झाला रहे। संचालन अरविंद्र जैन खड़ैरी व अमन जैन खनियांधाना ने किया।

(6) आध्यात्मिक क्विज - 7 जनवरी को प्रातःकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अशेष मोदी विदिशा एवं द्वितीय स्थान तंदुल जैन दिल्ली व हर्ष जैन फुटेरा ने प्राप्त किया। अध्यक्ष डॉ. शान्तिकुमारजी पाटील, निर्णायक पण्डित अमनजी जैन शास्त्री एवं निर्णायिका विदुषी ज्योतिजी सेठी थे। संचालन समर्थ जैन हरदा व आर्जव मोदी विदिशा ने किया।

(7) नाटक - 7 जनवरी को सांयकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सहजता टीम एवं द्वितीय स्थान ज्ञानानंद टीम ने प्राप्त किया। अध्यक्षा श्रीमती बबिताजी मदान एवं निर्णायक श्री अर्जुनदेवजी रहे। संचालन सोमिल जैन खनियांधाना व नमन जैन हटा किया।

(8) श्लोक पाठ - 8 जनवरी को रात्रि में आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान अंकित जैन कुटेरा एवं द्वितीय स्थान सम्यक जैन दिल्ली व संदेश जैन दिल्ली ने प्राप्त किया। अध्यक्ष प्रो. प्रमोदजी शास्त्री, विशिष्ठ अतिथि डॉ. राकेशजी जैन एवं निर्णायक पण्डित मंथनजी शास्त्री रहे। संचालन पुष्प जैन आगरा व श्रीवर्धन पाटील कुम्भोज ने किया।

(9) अंग्रेजी भाषण (उपाध्याय वर्ग) - 9 जनवरी को सांयकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान सम्यक जैन दिल्ली एवं द्वितीय स्थान अनमोल मंगुलकर ने प्राप्त किया। अध्यक्ष पण्डित अनेकांतजी शास्त्री भारिल्ल एवं निर्णायिका विदुषी सर्वदर्शीजी शास्त्री भारिल्ल। संचालन सौरव जैन व सोहम शाह सोलापुर ने किया।

(10) कौन बनेगा कथाविद (शास्त्री वर्ग) - 10 जनवरी को प्रातःकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान संदेश जैन दिल्ली एवं द्वितीय स्थान अविरल जैन खनियांधाना ने प्राप्त किया। अध्यक्ष डॉ. दीपकजी शास्त्री वैद जयपुर एवं निर्णायक पण्डित गौरवजी शास्त्री उखलकर रहे। संचालन आदित्य जैन फुटेरा व अमन जैन दमोह ने किया।

(11) कौन बनेगा कथाविद (उपाध्याय वर्ग) - 10 जनवरी को रात्रि में आयोजित प्रतियोगिता में प्रथम स्थान आयुष जैन उदयपुर एवं द्वितीय स्थान सम्यक जैन दिल्ली ने प्राप्त किया। अध्यक्ष पण्डित संजयजी सेठी एवं निर्णायक पण्डित अखिलजी शास्त्री मण्डीदीप रहे। संचालन आदित्य जैन फुटेरा व अमन जैन दमोह ने किया।

(12) भजन - 11 जनवरी को प्रातःकाल आयोजित इस प्रतियोगिता में प्रथम स्थान संदेश जैन दिल्ली एवं द्वितीय स्थान सक्षम जैन ललितपुर ने प्राप्त किया। अध्यक्षा श्रीमती सुप्रियाजी एवं निर्णायक श्रीमती समताजी गोदिका रहीं। संचालन रितेश जैन अमरमऊ व दीपक जैन मझगुवाँ ने किया।

(13) चित्रकला - प्रथम स्थान शाश्वत जैन सागर एवं द्वितीय स्थान निवेश जैन दिल्ली ने प्राप्त किया। निर्णायक पण्डित गौरवजी उखलकर एवं पण्डित अखिलजी मण्डीदीप रहे।

आचार्य समन्तभद्र खेल महोत्सव

दिनांक 24 दिसम्बर 2022 को खेल महोत्सव के उद्घाटन समारोह पर श्री सुशीलकुमारजी गोदीका, श्री परमात्मप्रकाशजी भारिल्ल, डॉ. शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित जिनकुमारजी शास्त्री आदि सभी अध्यापकगण उपस्थित थे।

वॉलीबाल में प्रथम स्थान पर ज्ञाता टीम (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर सहजता टीम (वरिष्ठ उपाध्याय) रही।

कबड्डी में प्रथम स्थान पर ज्ञाता टीम (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान पर ज्ञानानन्द टीम (शास्त्री द्वितीय वर्ष) रही।

कैरम (एकल) में प्रथम स्थान पर हर्षित जैन खनियांधाना एवं द्वितीय स्थान पर कपिल जैन बम्हौरी रहे। **कैरम (युगल)** में प्रथम स्थान पर हर्षित जैन खनियांधाना-कपिल जैन बम्होरी एवं द्वितीय स्थान पर सान्निध्य नेजकर दानोली-हर्षवर्द्धन पाटील कुम्भोज रहे।

बैडमिटन (एकल) में प्रथम स्थान पर रितेश जैन अमरमऊ एवं द्वितीय स्थान पर अशेष मोदी विदिशा रहे। **बैडमिंटन (युगल)** में प्रथम स्थान पर रितेश जैन अमरमऊ-पुष्प जैन आगरा एवं द्वितीय स्थान पर विराग बेलोकर डासाला-सिद्धान्त उपाध्ये सांगली रहे।

टेबल-टेनिस (एकल) में चेतन जैन रहली ने प्रथम स्थान एवं अमन सिंघई अलवर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **टेबल-टेनिस (युगल)** में प्रथम स्थान पर आर्जव जैन सिवनी-आर्जव जैन सागर एवं द्वितीय स्थान पर वैभव जैन सागर-विराग बेलोकर डासाला रहे।

शतरंज में प्रथम स्थान पर निखिलेश मैंद एवं द्वितीय स्थान पर हर्ष जैन फुटेरा रहे। **स्लो-साईकल** में अमन जैन खनियांधाना ने प्रथम स्थान एवं सोहम शाह सोलापुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया।

रस्सीकूद में सोहम शाह सोलापुर ने प्रथम स्थान एवं भव्य जैन उदयपुर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। **रस्सी खींच** में प्रथम स्थान ज्ञाता टीम (शास्त्री तृतीय वर्ष) एवं द्वितीय स्थान सहजता टीम (वरिष्ठ उपाध्याय) ने प्राप्त किया।

गोला फेंक में प्रथम स्थान पर महावीर भोकरे कोल्हापुर एवं द्वितीय स्थान पर सोमिल जैन खनियांधाना रहे। **तस्करी फेंक** में प्रथम स्थान पर महावीर भोकरेएवं द्वितीय स्थान पर श्रीवर्द्धन पाटील रहे।

400 मी. दौड में अशेष मोदी विदिशा प्रथम व सानिध्य नेजकर दानोली द्वितीय स्थान पर रहे। **800 मी. दौड़** में वैभव जैन सागर प्रथम व यश जैन दमोह द्वितीय स्थान पर रहे।

ज्ञातव्य है कि क्रिकेट प्रतियोगिता का आयोजन ढाईद्वीप पंचकल्याणक के पश्चात् 31 जनवरी से रतनद्वीप क्रिकेट स्टेडियम में किया जाएगा। समस्त आयोजन महाविद्यालय के निर्देशन में शास्त्री तृतीय वर्ष कक्षा के सहयोग से सम्पन्न हुये। महाविद्यालय द्वारा प्रतियोगिताओं में श्रेष्ठ प्रदर्शन करने वाले छात्रों को प्रमाण पत्र व पुरस्कार राशि प्रदान की गई। इस वर्ष विभिन्न प्रतियोगतिओं में लगभग 60,000 रूपये के पुरस्कार वितरित किए गए।

श्री वीतराग-विज्ञान विद्यापीठ परीक्षा बोर्ड

श्री टोडरमल स्मारक भवन

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राजस्थान)

शीतकालीन परीक्षा कार्यक्रम सत्र - 2023

दिन व दिनांक	नाम ग्रन्थ
शुक्रवार 03 फरवरी 2023	1. बालबोध पाठमाला भाग-1 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-1 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-1 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-1 5. छहढाला (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) पूर्वार्द्ध 7. मोक्षमार्गप्रकाशक (पूर्वार्द्ध) 8. जैन सिद्धान्त प्रवेशिका(गोपालदासजी बरैयाकृत) 9. विशारद प्रथम खण्ड - प्रथम वर्ष
शनिवार 04 फरवरी 2023	1. बालबोध पाठमाला भाग-2 (मौखिक) 2. जैन बालपोथी भाग-2 (मौखिक) 3. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-2 4. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग-2 5. द्रव्यसंग्रह (पूर्ण) 6. तत्त्वार्थसूत्र (मोक्षशास्त्र) उत्तरार्द्ध 7. लघु जैनसिद्धान्त प्रवेशिका (सोनगढ़) 8. मोक्षमार्गप्रकाशक (उत्तरार्द्ध) 9. विशारद प्रथम खण्ड - द्वितीय वर्ष 10. विशारद द्वितीय खण्ड - प्रथम वर्ष
रविवार 05 फरवरी 2023	1. बालबोध पाठमाला भाग-3 (मौखिक) 2. वीतराग-विज्ञान पाठमाला भाग-3 3. रत्नकरण्डश्रावकाचार (पूर्ण) 4. पुरुषार्थसिद्ध्युपाय (पूर्ण) 5. विशारद द्वितीय खण्ड - द्वितीय वर्ष

नोट - (1) सुविधानुसार परीक्षा का समय सुबह 9 बजे से शाम 5 बजे तक के बीच में कभी भी सैट किया जा सकता है।

(2) जहाँ एक से अधिक केन्द्र हों, वे आपस में मिलकर समय निश्चित करें।

(3) यदि किन्हीं विषयों के छात्र आपस में टकराते हों तो परीक्षा सुविधानुसार दिन में दो बार ली जा सकती है।

(4) बालबोध पाठमाला भाग 1, 2, 3 और जैन बालपोथी भाग-1 व 2 की परीक्षायें मौखिक लेवें। शेष सभी विषयों की परीक्षायें लिखित में लेवें।

- नन्दकिशोर पारिक, प्रबंधक-परीक्षा बोर्ड

• महाकाव्य : भरत का अन्तर्द्वन्द्व •

– डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

तृतीय अध्याय

(वीर)

यों पूर्व दिशा के सभी नरेशों के दिल मीठे बोलों से।
जीता भरतेश्वर ने सबको मीठे-मीठे सम्बोधन से।।
सबने उनका आतिथ्य किया अर लाद दिया है हारों से।
अर अपनी बहिन-बेटियाँ दी सन्मान किया उपहारों से।।

इसतरह भरत ने राजाओं को अपनेपन से मोड़ लिया।
सम्बन्ध बनाकर प्रेमभाव से नजदीकी से जोड़ लिया।।
सबको अपना पक्का साथी अर हित का चिन्तक बना लिया।
लड़कर मिल सकता नहीं कभी अपनाकर वह सब प्राप्त किया।।

अपनापन सच्चा मारग है अपनापन जीवन का साथी।
मानो तेरा स्वागत करने आया है ऐरावत हाथी।।
आया है ऐरावत हाथी तेरा जागा सौभाग्य अरे।
अपना ले इसको जीवन में तो ही तेरा सौभाग्य जगे।।

यदि अपनापन अपने में हो तो सम्यग्दर्शन होता है।
यदि अपने को अपना जानें तो सम्यग्ज्ञान महकता है।।
जब अपने में ही रम जावें जम जावें केवल अपने में।
यह ही है भाई आत्मध्यान इसको ही चारित कहते हैं।।

यह सम्यग्दर्शन ज्ञान चरित प्रगटे इस मानव जीवन में।
तो देर नहीं है फिर भाई भव से मुक्ति के मिलने में।।
अपनापन मुक्तिमारग है अपने में अपनापन ही तो।
मुक्ति है मुक्तिमारग है यह सब अनन्त सुखमय ही है।।

दिग्विजय यात्रा नहीं अरे यह तो एकत्व हमारा है।
अरे संगठित करने का मंगल अभियान हमारा है।।
रे रहे अखण्डित भरतक्षेत्र यह एक हमारा नारा है।
रे अखण्ड भारत ही तो बस हमको सबसे प्यारा है।।

अरे चक्रवर्तित्व हमारा ध्येय नहीं उद्देश्य नहीं।
बस हो अखण्ड यह भरतक्षेत्र है एकमात्र उद्देश्य यही।।
अरे हमारे साथ सभी आवें बस यही चाहते हम।
हम एक रहें हम एक रहें बस एक मात्र यह चाहें हम।।

इसी तरह दक्षिण-पश्चिम के राजाओं को याद किया।
अरे अखण्डित होने का उन सबको भी सन्देश दिया।।
उनको सब बातें समझाईं सन्देश दिया नजदीकी का।
वात्सल्य भाव से प्रेरित कर सन्देश दिया अपनेपन का।।

उन सबसे जुड़ने की अपील अत्यन्त सरल परिणामों से।
सभी तरह आश्वस्त किया सन्मान किया सद्भावों से।।
उन सबको बात समझ आई उत्साहित होकर सब आये।
जुड़ना सबने स्वीकार किया सब अपनेपन से ही आये।।

सबने उनका आतिथ्य किया अर लाद दिया है हारों से।
अर अपनी बहिन-बेटियाँ दी सन्मान किया उपहारों से।।
भरतराज ने उन सबको वात्सल्यभाव से अपनाया।
आतिथ्य सभी का स्वीकारा और गले से लगा लिया।।

अरे एकता से विकास की सीमाओं को समझाकर।
अर अखण्डता की असीम शक्ति की महिमा बतलाकर।।
सबके मन को उल्लसित किया प्रिय वचनों से सन्तुष्ट किया।
सबके मन को मन से जीता सबके मन को सन्तुष्ट किया।।

तीन खण्ड में विद्यमान सब मुकुटबद्ध सोलह हजार।
राजाओं के दिल को जीता वात्सल्यभाव से समझाकर।।
प्रेमभाव से अपनाकर सबको ही अपना बना लिया।
अर एक बूँद भी खून बहाये बिना सभी को जीत लिया।।

(दोहा)

हुई अहिंसा की विजय, सबके मन उल्लास।
मनरंजन के लिये सब, करें हास-परिहास।।

तीन खण्ड तो इसतरह, जीते भरत नरेश।
अर्द्धविजय पूरी हुई, हुआ नहीं संक्लेश।।

ऋषभदेव भगवान के, दर्शन के शुभभाव।
मन में जागे भरत के, थुति करने के भाव।।

-●-

प्रश्नोत्तरमाला

26

समयसार अनुशीलन के आधार से

– डॉ. शुद्धात्मप्रभा टड़ैया

(गतांक से आगे...)

प्रश्न : शरीर के गुणों के आधार पर की गई स्तुति किस नय की है?

उत्तर : शरीर के गुणों के आधार पर की गई स्तुति असद्भूत व्यवहारनय की स्तुति है।

प्रश्न : आत्मा का अनुभव कौन से नय की स्तुति है और क्यों?

उत्तर : आत्मा का अनुभव निश्चयनय की स्तुति है; क्योंकि निश्चय स्तुति विकल्पात्मक नहीं होती।

प्रश्न : ऐसे तीन शस्त्र बताइए जिनसे इन्द्रियों को भी जीता जाता है और ज्ञेय-ज्ञायक को भी भिन्न-भिन्न किया जा सकता है?

उत्तर : तीन शस्त्र निम्न हैं - 1) निर्मल भेदाभ्यास की प्रवीणता से प्राप्त अन्तरंग में प्रगट अतिसूक्ष्म चैतन्य स्वभाव।

2) प्रतीति में आती हुई अखण्ड चैतन्य शक्ति।

3) स्वयं अनुभव में आने वाला चैतन्य शक्ति का असंगपना।

प्रश्न : जितमोह किसे कहते हैं?

उत्तर : जो मुनि मोह को जीतकर अपने आत्मा को ज्ञान स्वभाव के द्वारा अन्य द्रव्य-भावों से भिन्न जानते हैं, उन्हें जितमोह कहते हैं।

प्रश्न : क्षीणमोह किसे कहते हैं? या तीसरी निश्चय स्तुति कौनसी है?

उत्तर : जिसने मोह को जीत लिया है, ऐसे साधु के सब मोह क्षीण होकर सत्ता में से नष्ट हों, तब उस साधु को क्षीण मोह कहते हैं। यही तीसरी निश्चय स्तुति है।

प्रश्न : दूसरी और तीसरी प्रकार की निश्चय स्तुति में क्या अंतर है?

उत्तर : दूसरी स्तुति भाव्य-भावक दोष के परिहार पूर्वक होती है, यह मध्यम निश्चय स्तुति है और तीसरी स्तुति भाव्य-भावक के अभाव पूर्वक होती है, यह उत्कृष्ट निश्चय स्तुति है।

प्रश्न : भाव्य-भावक से क्या तात्पर्य है?

उत्तर : राग-द्वेषरूप परिणमित आत्मा भाव्य है और उदय में आया मोहकर्म भावक है।

प्रश्न : भाव्य-भावक संकर दोष क्या है?

उत्तर : भाव्य और भावक - दोनों का शुद्ध जीव के साथ जो संयोग सम्बन्ध है, वह ही भाव्य-भावक संकर दोष है।

प्रश्न : भाव्य-भावक संकर दोष का परिहार कैसे होता है?

उत्तर : स्वसंवेदन ज्ञान के बल से भाव्य-भावक संकर दोष का परिहार होता है। भाव्य-भावक परिहार में राग-द्वेष का उपशम होता है, पूर्णतः अभाव नहीं। **(क्रमशः)**

एक और उपाधि डॉ. अखिल बंसल के नाम

नाथद्वारा (राज.) : यहाँ आयोजित दो दिवसीय डॉ. भगवती प्रसाद देवपुरा स्मृति समारोह 2023 में राष्ट्र भाषा हिन्दी सम्पादन के क्षेत्र में अनुपम योगदान देने हेतु साहित्य मण्डल श्रीनाथ द्वारा ने शताधिक कलमकारों के मध्य डॉ. अखिलजी बंसल को **पत्रकार प्रवर** की मानद उपाधि से सम्मानित किया।

डॉ. बंसल के सम्मान में साहित्यिक प्रतिष्ठान के प्रधान श्री श्यामजी देवपुरा व उनके सहयोगियों ने प्रशस्तिपत्र, श्रीनाथजी का चित्र, शाल, श्रीफल, कलम व अंगवस्त्र भेंट किया; एतदर्थ जैन पथप्रदर्शक परिवार की ओर से हार्दिक शुभकामनाएँ।

छहढाला शिविर एवं द्रव्यसंग्रह महामण्डल विधान

आगरा (उ.प्र.) : यहाँ दिनांक 27 दिसम्बर 2022 से 01 जनवरी 2023 तक श्री दिगम्बर जैन कुन्दकुन्द कहान स्मृति ट्रस्ट आगरा द्वारा छहढाला शिविर एवं द्रव्यसंग्रह महामण्डल विधान का मंगल आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पवित्रजी शास्त्री आगरा ने प्रातः द्रव्यसंग्रह एवं रात्रिकाल में छहढाला पर बाल, युवा व प्रौढ़ वर्ग की विशेष कक्षायें लीं। सांस्कृतिक कार्यक्रमों में एक नाटिका प्रस्तुत की गयी एवं सम्मेदशिखर व समवसरण विषय पर विशेष सत्र आयोजित हुए।

समस्त कार्यक्रम में पण्डित निलयजी शास्त्री एवं पण्डित गणतंत्रजी शास्त्री आगरा के निर्देशन में संपन्न हुए।

हार्दिक शुभकामनाएँ

पण्डित रूपेन्द्रजी शास्त्री छिंदवाड़ा को मध्यप्रदेश शासकीय सेवा में वर्ग 2 के संस्कृत अध्यापक पद पर नियुक्ति हेतु हार्दिक बधाई।

आप टोडरमल महाविद्यालय से 2014 में उत्तीर्ण 33वे बैच के प्रतिभाशाली स्नातक है। विगत 8 वर्षों तक आपने टोडरमल स्मारक ट्रस्ट में स्वागत कक्षाधिकारी के रूप में अपनी सेवाये प्रदान की; एतदर्थ टोडरमल स्मारक ट्रस्ट आपका आभार व्यक्त करता है।

आपके स्थान पर स्वागत कक्ष में महाविद्यालय के स्नातक विद्वान पण्डित अरविंदजी शास्त्री बण्डा को नियुक्त किया गया; एतदर्थ हार्दिक शुभकामनाएँ।

जैन शास्त्र, भक्ति गीत, तीर्थ दर्शन व पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो, प्रवचन साहित्य व अनेक जानकारियों के लिये vitragvani app Download करें या Visit करें - www.vitragvani.com
विविध चित्रों के लिए Visit करें - www.gurukahanartmusuem.org
Daily updates :- vitragvani vitragvani Telegram
संपर्क सूत्र - श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

सिद्धचक्र महामण्डल विधान सम्पन्न

भोपाल (म.प्र.) : यहाँ दिनांक 25 दिसम्बर से 01 जनवरी 2023 तक तीर्थधाम ज्ञानोदय भोपाल में सिद्धचक्र महामण्डल विधान का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्य विद्वानों में डॉ. संजीवकुमारजी गोधा के समयसार व रत्नकरण्ड श्रावकाचार पर, पण्डित हेमचन्दजी देवलाली, पण्डित मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित गौरवजी शास्त्री इन्दौर, पण्डित शुभमजी शास्त्री भोपाल के विभिन्न विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

विधान पण्डित संजयजी शास्त्री कोटा के निर्देशन में पण्डित अशोकजी उज्जैन, श्री दीपकजी धवल भोपाल एवं ज्ञानोदय के विद्यार्थियों के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

समस्त कार्यक्रम श्री गुलाबचन्दजी जैन, श्री मनीषकुमारजी जैन, श्री आशुतोषजी जैन, अशोकजी सुभाष ट्रान्सपोर्ट परिवार के निर्देशन में श्री रतनचन्दजी शास्त्री, श्री अर्पितजी शास्त्री, श्री अंकितजी शास्त्री के सहयोग से सम्पन्न हुआ।

इंदौर पंचकल्याणक के माता-पिता का सम्मान

इंदौर (म.प्र.) : यहाँ ढाईद्वीप जिनायतन इन्दौर में होने वाले सदी के ऐतिहासिक पंचकल्याणक में भगवान के माता-पिता बनने का सौभाग्य प्राप्त करने वाले श्रीमती चन्द्रकान्ताजी-आनन्दकुमारजी पाटनी के सम्मान स्वरूप 1 जनवरी 2023 को विशिष्ट समारोह का आयोजन किया गया, जिसका प्रारम्भ जिनेन्द्र भक्ति से हुआ।

इस अवसर पर बाल ब्र. अभिनन्दनजी शास्त्री खनियांधाना, पण्डित बिपिनजी शास्त्री मुम्बई, डॉ. संजीवकुमारजी गोधा जयपुर, डॉ. मनीषजी शास्त्री मेरठ, पण्डित ऋषभजी शास्त्री छिन्दवाड़ा, पण्डित विवेकजी शास्त्री इन्दौर का सान्निध्य प्राप्त हुआ।

यह सम्मान समारोह श्री नवीनजी पाटनी व श्री प्रमोदजी पहाडिया एवं ढ़ाईद्वीप जिनायतन समिति के सहयोग से हुआ।

आह्वान गीत

ढाईद्वीप जिनायतन में होने वाली सदी की ऐतिहासिक

यह प्रतिष्ठा प्राण की...

– अनुभव शास्त्री खनियांधाना

यह प्रतिष्ठा प्राण की है, न की बस पाषाण की है

आओ आओ प्रिय, नाचो गाओ पधारो, आया सौभाग्य हमारा।
आओ आओ बजाओ, बिगुल अहिंसा का गूंजेगा जैनों का नारा।।
आओ आओ प्रिय, नाचो गाओ पधारो, आया सौभाग्य हमारा।
सुनलो भविजन अनेकान्त और अहिंसा का गूंजेगा आज है नारा।।

ढाई द्वीप अखण्ड देखो भरत के छह खण्ड देखो।
आओ आओ प्रिय पधारो अकृत्रिम जिनबिम्ब देखो।।1।।

क्षेत्र देखो, मेरु देखो मध्य में ये सुमेरु देखो।
जिन प्रभु की सौम्य छवि लख निज प्रभु की ओर देखो।।2।।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा आदियोगी आदिदृष्टा।
आओ आओ प्रिय पधारो नष्ट करने सारी चेष्टा।।3।।

लक्ष्य आत्मनुभूति का हो आचरण निर्ग्रन्थ सा हो।
कहान गुरु की देशना सुन भूलकर भी भूल न हो।।4।।

नाद देखो नगाड़ देखो शंखनाद पुकार देखो।
इंद्र आने को तरसता आदियोगी की शान देखो।।5।।

आदिप्रभु का नाम लेकर स्वयं में विश्राम लेकर।
इतिहास के साक्षी बनो तुम प्रतिष्ठा में भाग लेकर।।6।।

ज्ञातव्य है कि इस आह्वान गीत का प्रथम प्रस्तुतीकरण 30 दिसम्बर 2022 को पत्रिका विमोचन कार्यक्रम में हुआ।

संस्थापक सम्पादक :
अध्यात्मरत्नाकर पण्डित रतनचंद भारिल्ल

सम्पादक : डॉ. संजीवकुमार गोधा
एम.ए.द्वय, नेट, एम.फिल (जैनदर्शन), पीएच.डी.

सह-सम्पादक : पण्डित परमात्मप्रकाश भारिल्ल

प्रकाशक व मुद्रक : ब्र. यशपाल जैन द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें –
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458, 7412078704
E-Mail : veetragvigyanjpp@gmail.com

प्रकाशन तिथि : 13 जनवरी 2023

प्रति,